International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1127-1128

वाल्मीकि रामायण में पुरूषार्थ चतुष्टय

डॉ. सुषमा नारा
सहायक प्रवक्ता, संस्कृत विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि की अमरकृति रामायण न केवल संस्कृत साहित्य की अपितु प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता की एक अमूल्य निधि है। एक ओर जहां रामायण विश्व में समृद्धतम संस्कृत साहित्य के परम महनीय आदि काव्य के स्थान पर प्रतिष्ठित है, वहां दूसरी ओर उसको संसार में प्राचीनतम भारतीय आर्य संस्कृति और सभ्यता के एक जीवंत महाकाव्य होने का गौरव भी प्राप्त है। जो दिव्यता, भव्यता और रमणीयता केवल इस काव्य में पाई जाती है, वह अन्यत्र नहीं है। महर्षि वाल्मीकि ने प्रसिद्ध रामकथा के माध्यम से अपनी आलौकिक काव्यतूलिका द्वारा वेदों व उपनिषदों में वर्णित सर्वोच्च मानव संस्कृति के शाश्वत और स्वर्णिम तथ्यों का ऐसा भव्य चित्र दिया है जो मानवीय होते हुए भी दिव्य है और पुरूषार्थ सिद्धि के लिए उत्तम है।

"पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति।"
स्वयं वाल्मीकि ने भी कहा है कि
यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावत् रामायणी कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

अर्थात पृथ्वी पर जब तक पर्वतों एवं नदियों की सत्ता है, तब तक संसार में रामायण का प्रचलन रहेगा। यह आदिकाव्य सम्पूर्ण मानव जीवन के लक्ष्य, धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष रूपी पुरूषार्थों को समाहित किए हुए है।

हिन्दू धर्म में पुरूषार्थ से तात्पर्य मानव के लक्ष्य या उद्देश्य पुरूषार्थ = पुरूष + अर्थ अर्थात् मानव को 'क्या' प्राप्त करने का पर्यत्न करना चाहिए। प्रायः मनुष्य के लिए वेदों में चार पुरूषार्थों का विधान किया गया है–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। योग वशिष्ठ के अनुसार सद्जनों और शास्त्र के उपदेश अनुसार चित्त का विचरण ही पुरूषार्थ कहलाता है।[1] वाल्मीकि रामायण में भी महर्षि वाल्मीकी ने सभी पुरूषार्थों का समावेश किया है।

वाल्मीकि ने मूल्यविषयक तत्त्वों काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष, श्रेय, प्रेय, स्वस्ति, शान्ति, ऋत् (सत्य) आदि का बड़ी गहराई में जाकर उपबृंहण किया है।

"कामार्थगुणसंयुक्तं धर्मार्थगुणविस्तरम्।
समुद्रमिव रत्नाद्यं सर्वश्रुतिमनोहरम्।।"[2]

वाल्मीकि ने नारद से धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष संबंधी समग्र वस्तु 'श्रुत्वा वस्तु समग्रं तद्धर्मार्थसहितं हित' सुनकर राम के जीवनचरित का अन्वेषण करना प्रारम्भ किया। इससे स्पष्ट है कि रामायण में पुरूषार्थ चतुष्ट्य प्रमुख रूप से वर्णित है। वाल्मीकि के अन्वेषण की विधि व्यक्त भी है और अव्यक्त भी, क्योंकि पहले उन्होंने 'व्यक्तमन्वेषते भूयो यदवृतं तस्य धीमतः' लिखा और फिर वे कुश के आसन पर सम्यक् रूप से आसीन होकर, आचमन कर, अंजलि बांध योगधर्म से राम के चरित का अन्वेषण करने लगे। योग बल से वाल्मीकी ने राम, लक्ष्मण, सीता, रानियों सहित राजा दशरथ तथा राष्ट्र के संबंध में सारी बातों का यथावत् ज्ञान प्राप्त कर लिया।[3]

वाल्मीकि रामायण में धर्म पुरूषार्थ

व्यक्त और अव्यक्त अन्वेषण के फलस्वरूप वाल्मीकि ने अपने रामकाव्य का श्रीगणेश किया। अपने मनोरम काव्य में उन्होंने राम के जन्म, अमित विक्रम, उनकी सर्वानुकूलता, लोकप्रियता, क्षमाशीलता, सौम्यता, सत्यशीलता आदि दुर्लभ गुणों का अनुपम वर्णन धर्म की दृष्टि से किया है।

"तत् सर्वं तत्वतो दृष्ट्वा धर्मेण स महामतिः।
अभिरामस्य रामस्य तत् सर्वं कर्तुमुधतः।।"[4]

अपने काव्य में वर्णनीय विषयों का उल्लेख उन्होंने बालकाण्ड के तृतीय सर्ग के तीस श्लोकों में अत्यन्त स्पष्ट रूप से किया है। रामायण के अध्ययन से यह बात पूर्णतः स्पष्ट हो कवि वाल्मीकि भी दृष्टि व्यापक रही है। उन्होंने सिर्फ मानव को ही अपना विषय नहीं बनाया बल्कि मानवेतर बाह्य प्रकृति और चराचर को भी विषय बनाया है, यद्यपि मानेवतर बाह्य प्रकृति और अनेक चराचर रूप महर्षि के दृष्टिपथ में है, तथापि उनका प्रधान केन्द्रबिन्दू लोकचरित ही है। कवि बाह्य प्रकृति के साथ मानव की अन्तः प्रकृति का सामन्जस्य स्थापित करने में भी अत्यन्त सफल हुए हैं। ज्ञानियों के ज्ञानयोग, जिससे वे आत्मा के शुद्ध–बुद्ध मुक्तस्वरूप को पहचान कर ब्रह्मनन्द प्राप्त करते हैं, की भांति ही महर्षि ने अपनी भर्गस्वतीवाणी 'यथा भर्गस्वतीं चाचमा वदानि जनाननु' (अथर्व 6.69. 2) से अनुपम शब्दविधान साधाना कर हृदय को रसदशा में पहुंचाकर अदभुत भावयोग की सृष्टि की है, जहां 'रसो वै सः' की साक्षात्कृति से सधः परनिर्वृति की उपलब्धि होती है।

आत्मज्ञान और प्रपंचज्ञान के बीच ज्ञानियों द्वारा खोदी गई खाई को पार कर महर्षि ने 'लोकमंगल' और 'स्वराष्ट्ररंजन' की जिस उदात्त भावना को मूर्त स्वरूप दिया, उसे जगद्व्यवहार में रामराज्य कहा जाता है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा प्रदत्त धर्म का मार्ग, सत्य की मार्गणा, सत्य की सिद्धि एवं सत्य की उपलब्धि रामायण की आधारशिला है।[5]

अर्थ पुरूषार्थ

यह वाल्मीकि के जीवन–दर्शन का दूसरा पक्ष है, राम के राज्याभिषेक की तैयारी हो रही है और तभी उन्हें चौदह वर्षों की लंबी अवधि के लिए वन जाना पड़ता है पर राम इन दोनों पक्षों को समभाव से लेते हैं। उनकी मुख की शोभा जरा भी म्लान नहीं होती और न ही चित्त में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न होता है।

अभिषेक विधात से एवं सुहदजनों की विपत्ति की आशंका से, उन्हें थोड़ी भी घबराहट नहीं होती है। महर्षि के मनोरम शब्द इस प्रसंग में श्रवणीय हैं–

"न चास्य महतीं लक्ष्मीं राज्यनाशोडपकर्षति।
लोकाकान्तस्य कान्तत्वाच्छीतीरश्मेरिव क्षपाः।।
न वनं गन्तुकामस्य व्यजतश्च वसुन्धरम्।
सर्वलोकातिगस्येव लक्ष्यते चित्तविक्रिया।।"[6]

काम पुरूषार्थ

काम पुरूषार्थ का अर्थ सौंदर्य बोध की भावना से मिश्रित है। अमंगल घटनाओं में भी मंगलबोध महर्षि वाल्मीकि का अनुपम सौंदर्यबोध है। जब वन में विराध रामलक्ष्मण को लेकर भागता है, तो राम लक्ष्मण यद्यपि अप्रकम्प्य हैं, फिर भी राम लक्ष्मण से कहते हैं–ले चलने दो इसे थोड़ी देर, वन में राह दिखला दे यह। किन्तु जब उन्हें उसकी नियत पर संदेह का और सीता की असुरक्षा का भान होता है, तो तुरंत लक्ष्मण उसकी बायीं ओर राम दाहिनी भुजा काटते हैं, तो विराध राम को अपनी कहानी सुनाते हुए बताता है कि वह पूर्व में तुम्बरू नामक गन्धर्व था। रम्भा के प्रति आसक्त हो जाने के कारण वैश्रवण कुबेर की सेवा में उपस्थित न होने के चलते कुबेर ने उसे शाप दे दिया, जिससे वह विराध नामक राक्षस बन गया। अराधना के अभाव में विराध ही तो बनना होता है।

परम ऋषि वाल्मीकि रामायण पर आधारित श्रृंगारविधि में राधा और कृष्ण के प्रेम का सुंदर चित्रण हुआ है और ऋतुसंहारं में आंध्रप्रदेश की ऋतुओं का। शशिदूतम् भी काम रूपी पुरूषार्थ का संदेश देती हुई मेघदूत पर आधारित है।[7]

वाल्मीकि ने प्राकृतिक सौंदर्य व उसकी रमणीय छटा का बड़ा सुंदर वर्णन किया है। ऐसी अदभुत व सुंदर वातावरण में मन खिल उठता है।

"मेघ जल के भार का वहन कर रहे हैं और इस कारण वे वारिधर हैं। जैसे कोई गर्भिणी से पर्वत पर चढ़े तो ठहर–ठहर कर ही आगे बढ़ती है, उसी प्रकार ये वारिवाहक मेघ पर्वतों की ऊंची–ऊंची चोटियों पर विश्राम कर ही आगे बढ़ते हैं और भार वहन–जन्य कष्ट के कारण गर्जना कर मानों लम्बी–लम्बी सांसे ले रहे हैं।"

"मेघ की कामना करते हुए बगुले की पंक्ति प्रसन्नता के साथ आकाश में ऐसी शोभा पा रही है, मानों उजले कमल की लंबी माला हवा से लहरा रही है।" 'मेघाभिकामा' में गर्भधारण का उदेश्य अभिव्यजिंत है और इसी के आधार पर कालिदास ने मेघदूत में 'गर्भाधानक्षणपरिचयन्नमाबद्वभालाः सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः'[8]

महर्षि वाल्मीकि ने चित्रकूट की रमणीयता में ऋतुराज बसंत का योगदान भी स्वीकारा है। शिशिर के बीतने पर राम जब चित्रकूट पहुंचते हैं, तो सब कहीं फूलों से लदे वृक्षों पर ही उनकी दृष्टि पड़ती है।

राम सीता को कहते हैं–"देखो सीते! सर्वत्र फूलों से लदे वृक्ष सुशोभित हो रहे हैं। वसन्त में अपने फूलों से भरे इन पलाशों को देखो, जो गूंथी हुई माला अवस्थित है। इन फले हुए बेर–वृक्षों को देखो, जो अपने फलों और पत्तों से झुके हुए हैं। इस रमणीय वन प्रदेश में जहां फलों की सेजें सजी हैं, हमारा मन लग जाएगा।[9]

मोक्ष पुरूषार्थ

वाल्मीकि जीवन दर्शन का चतुर्थ आयाम है उनका परमार्थ–बोध। महर्षि का परमार्थ है – 'सत्य'। सत्य ही सुंदर है, सत्य ही शिव है सत्य ही धर्म है, सत्य ही ईश्वर है, सत्य ही परम निःश्रेयस है। समग्र वाल्मीकि काव्य सत्य के साथ जीवन में किए गए प्रयोगों का परिणाम है। सत्य के लिए ही राम वन जाते हैं, सत्य के लिए ही दशरथ अपनी जान गंवाते हैं, सत्य के लिए ही भरत के सत्याग्रह को राम ठुकराते हैं और सत्य के लिए ही भरत तापस वेश में राज चलाते हैं।[10] वाल्मीकि के अमृतकल्प शब्दों में–

तस्मात् सत्यात्मकं राज्यं सत्ये लोकः प्रतिष्ठितः।
ऋष्यश्चैव देवाश्च सत्यमेव हि मेनिरे।
सत्येमेवेश्वरों लोके ..... सत्यमूलानि सर्वाणि।।[11]

जब ग्रीष्म ऋतु का आरम्भ होता है तो मायामानुष–राम के मन में मधुर वैराग्य की भावना जाग उठती है। इसी प्रसंग में दर्शन और श्रृंगार का अदभुत संगम देखा जा सकता है। जागृति स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीयावस्था का चिंतन आरंभ होता है। कर्तृत्व, अकर्तृत्व और अहं प्रत्यय की मीमांसा होती है।[12]

इसी प्रकार के पुरूषार्थ चतुर्थ से सम्पन्न व्यक्ति देवत्व को प्राप्त करता है और यही इसका निष्कृष्टार्थ है।

संदर्भ

1. योग वशिष्ठ महारामायण–प्रकाशन–2
2. वाल्मीकि रामायण – 1.3.8
3. वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना, डॉ. व्रजेश, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2001
4. वाल्मीकि रामायण, 1.3.7
5. वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना, डॉ. व्रजेश, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2001
6. वाल्मीकि रामायण – 2.1.9.32
7. भारतीय महाकाव्य–सं. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन दिल्ली
8. पूर्वमेघ–10
9. वाल्मीकि रामायण – 2.56.9,25
10. वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना, डॉ. व्रजेश, नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ0 सं0 13
11. वाल्मीकि रामायण – 2.109.10–13
12. भारतीय महाकाव्य–सं. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन दिल्ली